मगरमच्छ

मगर

आईयूसीएन (IUCN) स्थितिः असुरक्षित

पर्यावास
ताज़ा पानी और खारे पानी का पारिस्थितिकी तंत्र

प्रजनन
अंडे देनाः फरवरी – अप्रैल
अंडे से शावक निकलनाः
अप्रैल – जून

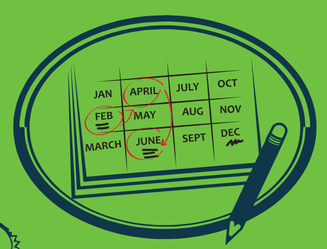

प्रजनन आयु

मादा
6.5 साल

साल में एक बार
प्रजनन करती है

रेत में गड्ढे बनाकर
8–46 अंडे देती है

- निशाचर लेकिन दिन के समय शिकार करने में सक्षम
- ताज़ा पानी वाली झीलों, नदियों और दलदलों में रहता है
- ज़मीन और पानी दोनों में जीवित रहने में सक्षम
- आसानी से दिखाई नहीं देता; ज़मीन पर अच्छे से छलावरण करता है और पानी में छिपा हुआ रहता है
- ठंडे रक्त का जीव; सूरज की रोशनी से गरमाहट लेने के लिए तालाब/नदी के किनारे आराम करता है
- गर्म और ठंडा तापमान होने पर बिल खोदता है
- कम दूरी में अचानक तेज़ दौड़ लगाने में सक्षम
- अत्यंत पैने दांत; जानवरों में सबसे तेज़ काटता है
- घात लगाकर शिकार करता है; शिकार के पास आने का इंतज़ार करता है और फ़िर, अचानक आक्रमण करता है
- उकसाने पर आक्रामक हो सकता है

औसत जीवनकाल

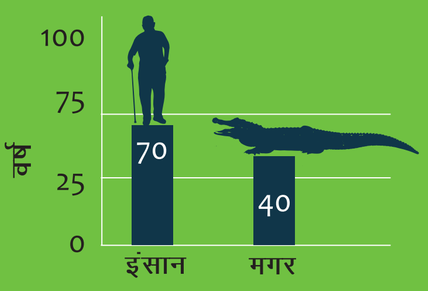

घड़ियाल

आईयसीएन (IUCN) स्थितिः गंभीर रूप से विलुप्तप्राय

- इंसानों को कोई ख़तरा नहीं; मछलियों का शिकार करते हैं
- इनकी नाक पर बल्ब जैसी उपज होती है जिसका अकार 'घड़े' जैसा होता है; इसलिए इसे घड़ियाल कहा जाता है
- इसकी उपस्थिति का अर्थ होता है कि नदी/झील का पानी स्वच्छ है
- ज़मीन पर लंबी दूरी तय नहीं कर पाता है अपने बचाव के लिए दूसरी नदियों/झीलों में चला जाता है
- आबादी में तीव्र कमी; गंभीर रूप से विलुप्तप्राय

खारा पानी मगरमच्छ

आईयसीएन (IUCN) स्थितिः ख़तरे से बाहर

- मुख्यतः भारत के पूर्वी तटों और अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पाया जाता है; खाड़ियों के नमकीन पानी में रहता है
- भारत में दुर्लभ; 1960 के दशक में शिकार और इसके पर्यावास का विनाश होने के कारण इसकी आबादी में तेजी से कमी आई
- मगर और घड़ियाल के विपरीत यह वनस्पति से ढके टीलों पर अपना घोंसला बनाता है

भारत में केवल ओडिशा राज्य में मगरमच्छ की सभी 3 प्रजातियां मिलती हैं

क्या आप जानते हैं?

- नदी/झील में मगर होने का अर्थ है कि वहां का पानी स्वच्छ है
- पर्यावास छिन जाने, शिकार बनने और प्रतिशोध के कारण मार दिए जाने की घटनाएं मगर की आबादी के लिए ख़तरा साबित होती हैं
- खेती के लिए मैन्ग्रोव हटाए जाना और मत्स्यपालन इनका पर्यावास छीन लेता है
- सूखे के समय ये नदी/झील की तलाश में लंबी दूरी तय करने में सक्षम होते हैं
- एक समय ऐसा भी था जब मगरों की प्रचुर उपस्थिति थी लेकिन आज इनकी आबादी गंभीर रूप से घट चुकी है
- इनकी चमड़ी और मांस के लिए इनका शिकार किया जाता है
- लोगों द्वारा मगरमच्छ वाले इलाकों में मवेशी चराना इंसानों और मगरमच्छ के संघर्ष को जन्म देता है
- बाड़ के समय, मगरमच्छ शहरी रास्तों और घरों में घुस जाते हैं; ख़ासकर, मगर जो बारिश के मौसम में बने छोटे अस्थाई तालाबों द्वारा यात्रा करने में सक्षम होते हैं
- इनके शावकों का लिंग ऊष्मायन के समय तापमान पर निर्भर करता है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Forest Department Karnataka
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

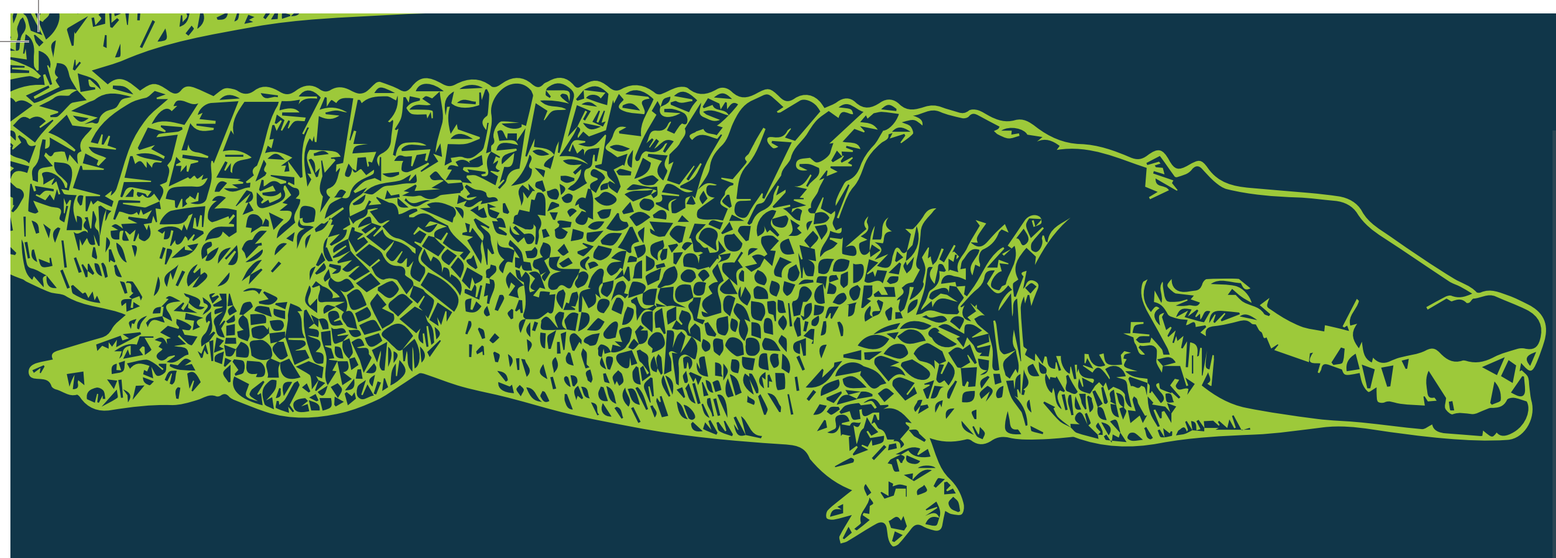

मगरमच्छ दिखाई देने पर क्या करें और क्या न करें

ये करें

- मगरमच्छों वाले इलाकों से गुज़रते समय ज़्यादा सावधानी बरतें और पानी के बहुत पास न जाएं। पानी के किनारों से दूर रहें
- मगरमच्छ दिखने पर अपने समूह के सदस्यों को इसकी चेतावनी दें। शांत रहें और जानवर से बहुत दूर रहें
- मगरमच्छ वाले इलाकों में घुसते समय या वहां पैदल चलते समय, नदी/झील में नाव छोड़ते या वापस लेते समय ख़ास तौर पर सावधानी बरतें। पानी में जाने की आवश्यकता हो, तो नाव में जाएं और अपने बाहों और टांगों को सुरक्षित रखें
- नदी के किनारों के पास जाना हो तो केवल दिन के समय ही जाएं
- अपने पशुधन को मगरमच्छों से बचाने के लिए उन्हें नदी/झील के किनारों या तलों से दूर चराएं
- अगर कोई मगरमच्छ आपकी तरफ़ दौड़कर आ रहा है, तो तेज़ चिल्लाएं ताकि आसपास के लोग आपको सुन लें। भागें या पेड़ पर चढ़ जाएं
- कोई अनजान नदी/झील में जाने से पहले स्थानीय लोगों को वहां मगरमच्छ की उपस्थिति के बारे में पूछ लें
- मगरमच्छ वाले इलाकों में मगरमच्छ संबंधी चेतावनी संकेतों और सलाहकारी सूचनाओं का पालन करें और निर्देशित रास्ते पर ही चलें
- इंसानी पर्यावास में अगर कोई मगरमच्छ दिखाई दे तो उस पर नज़र रखें। उसके साथ कोई छेड़छाड़ न करें। वन अधिकारियों को बुलाएं
- मगरमच्छ द्वारा आक्रमण करने पर पीड़ित व्यक्ति को तुरंत पास के अस्पताल ले जाएं

ये न करें

- मगरमच्छों को कुछ भी न खिलाएं, उन्हें उकसाएं न और उन्हें परेशान ना करें। उनके बहुत पास न जाएं क्योंकि वे अपने बचाव में आक्रमण करते हैं
- जिन नदियों/झीलों में मगरमच्छ हैं उनमें पानी के खेल न खेलें और उनमें तैरे नहीं
- जिन इलाकों में मगरमच्छ हैं वहां हाथों को ज़मीन पर रखकर चार पैरों पर न चलें क्योंकि मगरमच्छ आपको गलती से कोई जानवर समझ सकता है
- झीलों और नदियों में नहाने, कपड़े धोने या धार्मिक क्रियाएं करने से बचें। ऐसे इलाकों में मछली पकड़ने या घोंघे, केकड़ें, तरह–तरह के सीप या झींगे के बच्चे पकड़ने जैसी गतिविधियां न करें
- नदी के आसपास शौच न करें। इसके बजाय शौचालय का प्रयोग करें
- कपड़े धोने के लिए रोज़ नदी/झील के किनारे एक ही जगह से अपनी बाल्टी न भरें
- मछली और मांस के कचरे को इंसानी पर्यावास के पास स्थित नदियों/झीलों में न डालें। इससे मगरमच्छ आकर्षित होते हैं
- मगरमच्छ संरक्षण क्षेत्रों में अधिकारियों की अनुमति या गाइड के बिना न जाएं
- नदियों/झीलों के पास स्थित मिट्टी के टीलों के पास न जाएं। मगरमच्छ ऐसे टीलों में अंडे देते हैं और वे अपने अंडों की रक्षा भी करते हैं। ऐसे में, वे बचाव के लिए आक्रमण कर सकते हैं
- बदला लेने की भावना से किसी मगरमच्छ पर आक्रमण करने की कोशिश न करें। जितनी जल्दी हो सके वन विभाग के अधिकारियों को सूचित करें

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Forest Department Karnataka
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

आपके इलाके में हाथी दिखने पर

क्या करें और क्या न करें

हाथी दिखने पर तुरंत अपनी रफ़्तार धीरे कर दें, उनसे सुरक्षित दूरी बनाकर रखें क्योंकि आपसे ख़तरा महसूस करने पर वे आक्रमण कर सकते हैं

हाथी के साथ सेल्फ़ी लेने या पास से उसकी तस्वीर लेने या उसे खाना खिलाने की कोशिश न करें

अगर हाथी से आपकी जान, संपत्ति या फ़सल को ख़तरा है तो उन्हें भगाने के लिए ढोल बजाकर तेज़ आवाज़ करें

हाथी का पीछा न करें क्योंकि वह अपने बचाव में आप पर आक्रमण कर सकता है

हाथी अगर रास्ते से जा रहे हैं तो अपना वाहन कुछ ही दूरी पर रोक दें और धीरे–धीरे उसे पीछे करके उन्हें जाने का रास्ता दें

हाई बीम लाइट का इस्तेमाल न करें। इंजन को बंद न करें क्योंकि हाथी अपने बचाव में आक्रमण करने के लिए आपकी ओर दौड़ सकता है और आपकों गाड़ी पीछे ले जाने की जरूरत पड़ सकती है

अगर आप भोर और संध्याकाल में ऐसे इलाके से गुज़र रहे हैं जहां हाथी हो सकते हैं तो चौकन्ना रहें और अपना वाहन धीरे चलाएं

संवेदनशील इलाकों के बारे में चेतावनी देने वाले संकेतों को गंभीरता से लें

खेतों को हाथी के आक्रमण से बचाने के लिए उनके चारों ओर बाड़ के रूप में काटों वाली झाड़ियां लगा दें और खाई खोद दें

खड़ी फ़सल को लावारिस छोड़कर न जाएं

पेड़ों से पके हुए फल हटा दें क्योंकि हाथी इनकी ओर आकर्षित होते हैं

किराने का सामान और राशन को घर के बाहर या मिट्टी के घर में न रखें। अनाज आदि को पक्के घर में रखें

आपके घर के आसपास अगर हाथी आ गए है तो धीरे – धीरे घर के अंदर चले जाए और उन्हें वहां से जाने का मौका दें

रात में घर के आसपास अगर हाथी हों तो दरवाज़े न खोलें और घर से बाहर न निकलें

इंसानी गतिविधि वाले इलाके में हाथी दिखने पर वन विभाग के हेल्पलाइन नंबरों पर कॉल करके इसकी सूचना दें

हमेशा वन विभाग द्वारा दिए गए हाथियों की गतिविधि संबंधी जानकारी अपने पास रखें और ऐसे इलाकों में न जाएं जहां हाथी मौजूद हों

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

एशियाई हाथी

26000 - 29000
भारत में आबादी

आईयूसीएन (IUCN) स्थिति : विलुप्तप्राय

हाथी का पर्यावास

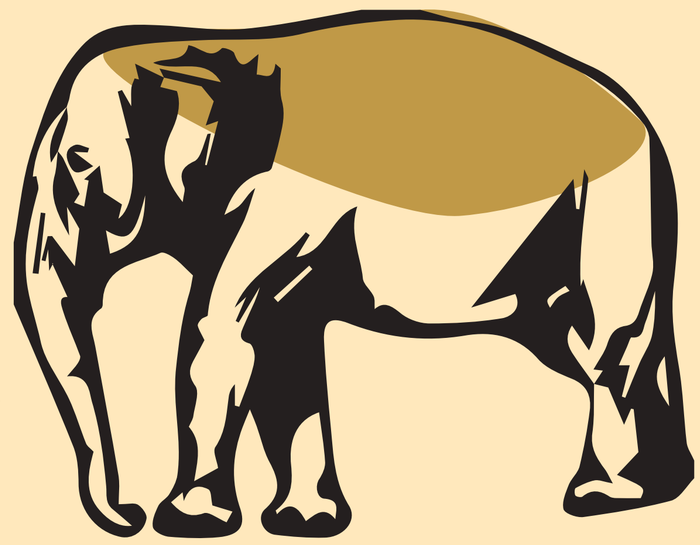

विस्तृत सीमाए घास से भरपूर सूखे और नम पतझड़ी आवासीय क्षेत्रों में रहना पसंद करता हैं.

आहार

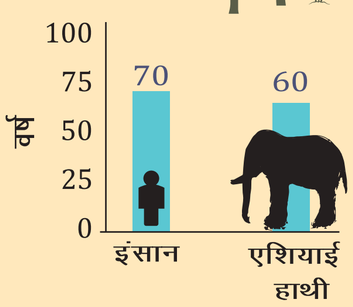

घास, टहनियां, पेड़ों की' छाल, शाखाएं, काष्ठीय पौधे, जड़ी–बूटियां और झाड़ियां प्रतिदिन 250–300 किलोग्राम

जीवनकाल

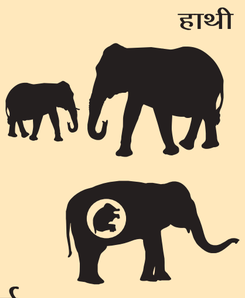

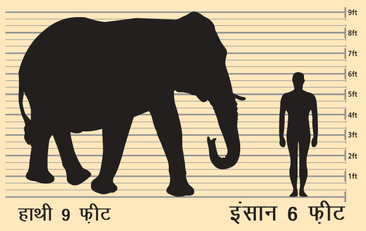

60 साल

प्रजनन आयु

14 साल

गर्भकाल

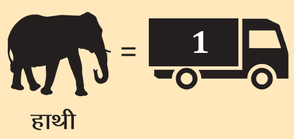

18–22 महीने

लंबाई:

वज़न

शावकः जन्म के समय 100 किलो
हथनीः 2500–4500 किलो
हाथीः 3000–6000 किलो

हाथी = 1

क्या आप जानते हैं?

- केवल नर एशियाई हाथी के हाथीदांत होते हैं। मखना उन दोनों प्रकार के मादा और नर में से एक होते हैं, जिनके पास हाथीदांत नहीं होते
- कुशल रूप से संपर्क करने और चीज़ों को पकड़ने के लिए अपनी सूंड का इस्तेमाल करता है
- अत्यंत बुद्धिमान; देखकर औज़ारों के इस्तेमाल की नक़ल करने में सक्षम
- हाथी के झुंड का नेतृत्व वयस्क हथनी करती है जिसे कुलमाता भी कहा जाता है
- स्वच्छ और पीने योग्य पानी पीता है
- भारत में 1000 सालों से अधिक समय से हाथियों को बंदी बनाकर रखने का इतिहास है
- इसके लिए छांव आवश्यक है जो इसे निर्जलीकरण से बचाती है
- इसकी पाचन क्षमता 40% है; अतः पूर्ति करने के लिए यह लगातार खाता रहता है
- इसमें पसीने की ग्रंथिया नही होती है वह खुद पर मिट्टी फेंकता है और अपने बड़े कानों का उपयोग हवा फैलाने के लिए करता हैं

समग्र दृष्टिकोण

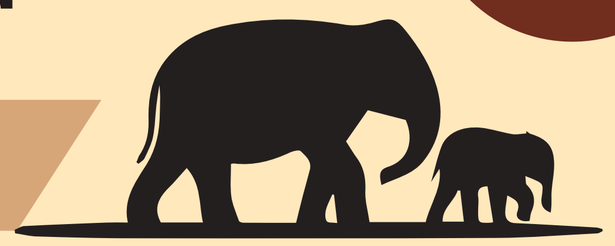

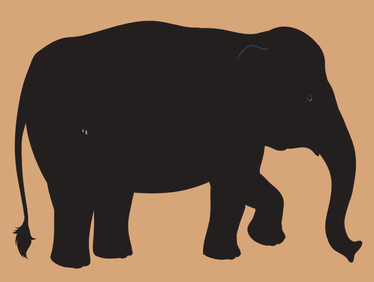

1. हर साल 100 से ज़्यादा हाथी इंसानों द्वारा प्रतिशोध लेने या अवैध शिकार के कारण मारे जाते हैं
2. सभी हाथी फ़सलों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। वैकल्पिक फ़सल उगाने और हाथी को दूर रखने के लिए अस्थायी बाड़ों के इस्तेमाल से (फ़सल परिपक्व होने पर) इन संघर्षों को कम किया जा सकता है
3. हाथी के कारण इंसान तभी मारे जाते हैं जब अचानक हाथी और इंसान का सामना हो जाता है या इंसान हाथी के बहुत पास चला जाता है। समय से पहले चेतावनी प्राप्त करने और हाथियों से दूर रहने के तरीकों का पालन कर इन घटनाओं को रोका जा सकता है
4. वनों की कटाई, कृषि भूमि का विस्तार, इंसानों द्वारा अतिक्रमण, हाथियों के साथ संघर्षों का कारण है

प्रवास

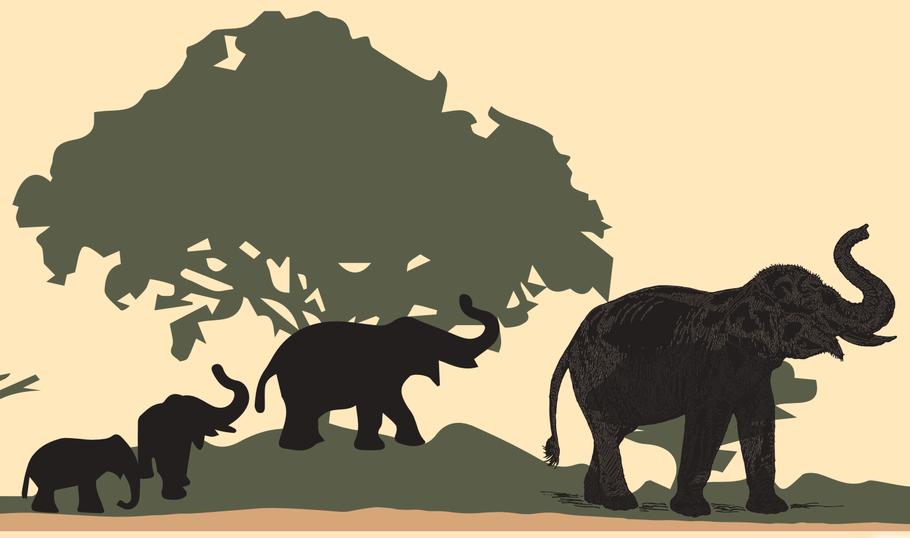

हाथियों के दल की कुलमाता प्रवासी मार्ग को स्पष्ट रूप से याद रखने में सक्षम होती है। पर्यावास विखंडन और प्रवासी मार्ग में रुकावटें इंसानों और हाथियों के बीच संघर्षों को जन्म देती हैं। दल की कुलमाता या वयस्क हाथी की मृत्यु दल के व्यवहार में रुकावट पैदा करता है जिससे ऐसे संघर्ष और भयंकर बन जाते हैं

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

गौर

आईयूसीएन (IUCN): असुरक्षित

पर्यावास: पहाड़ी जंगल और घासदार इलाके

आबादी

विश्वभर	लगभग 30,000
भारत	लगभग 28,000

- गाय प्रजाति में यह सबसे लंबा और भारी होने की क्षमता रखता है
- यह यौन रूप से द्वीरूपी होता है, नर और मादा दोनों के सींग होते हैं
- वयस्क नरों के चमकदार काले बाल होते हैं और गले से लेकर सामने के पैरों तक ढीली त्वचा झूलती रहती है

- वयस्क मादाओं का रंग गहरा भूरा होता है और उनके सींग पतले होते हैं
- सुबह और शाम को सबसे ज़्यादा सक्रिय; इंसानी पर्यावासों में निशाचर
- सींग से आक्रमण करने के लिए अपने सिर और पीछे की टांगों को नीचे झुकाता है
- चौकन्ना होने पर 'सीटी के साथ घरघराने' की आवाज़ निकालता है
- अपने बड़े आकार के बावजूद बहुत ही शर्मिला और शांत है
- केवल उकसाने या बहुत पास जाने पर ही यह आक्रमण करता है

प्रजनन

प्रजनन सालभर होता है लेकिन दिसम्बर और जून के बीच सबसे ज़्यादा होता है

प्रजनन के मौसम में नर की गर्जन 1.6 किलोमीटर दूर से भी सुनाई देती है

औसत जीवनकाल

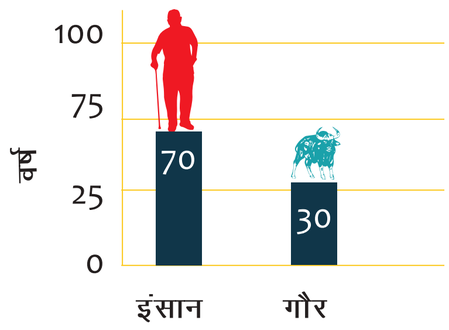

प्रजनन आयु

2–3 साल

गर्भकाल :

9 महीने → हर एक मादा 1–1.5 साल में बछड़े को जन्म देती है

एक बार में 1 शावक

वज़न: 23 किलो

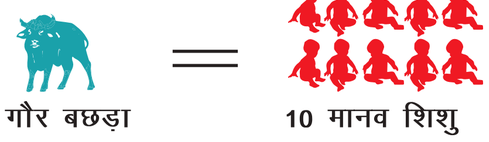

समूह की संरचना

मौसम और पर्यावास पर निर्भर करता है

एक सांड के साथ 8–11 मादाएं

प्रजनन मौसम के दौरान:
ज़्यादा नर झुंड में शामिल हो जाते हैं

प्रजनन मौसम के बादः
नर झुंड से निकल जाते हैं

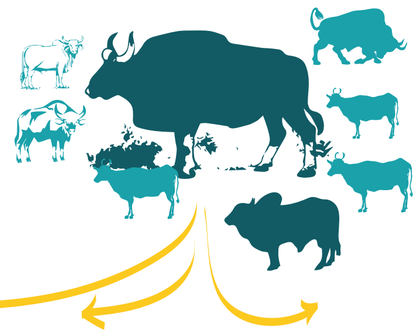

अधिकतम वज़न – 1,000 किलो
अधिकतम लंबाई – 1.9 मीटर

आहार

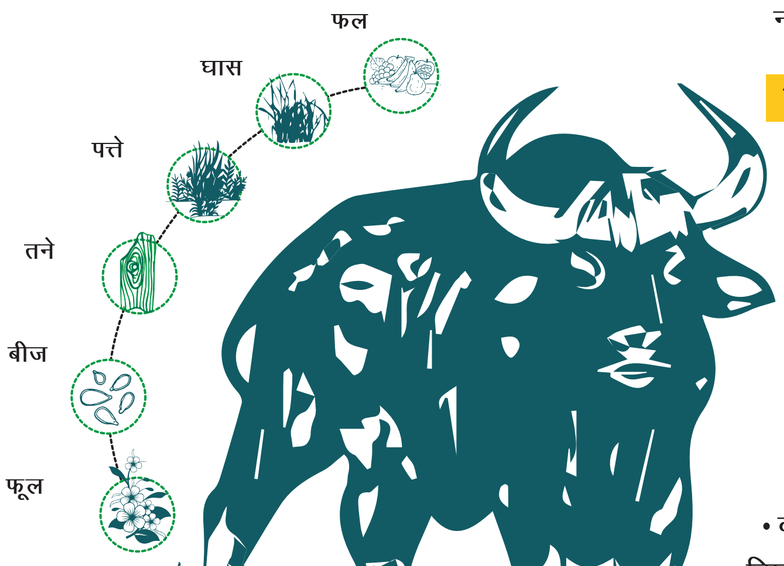

क्या आप जानते हैं?

- गौर पौधों के समुदायों और भूदृश्य परविर्तन को नियंत्रित कर पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं
- गौर का शिकार पशु ट्राफी, सींग, खेल और कुछ क्षेत्रों में मांस के लिए किया जाता है
- गौर को रिंडरपेस्ट और मुंहपका–खुरपका जैसी मवेशी बीमारियां आसानी से हो जाती हैं
- इनकी आबादी को पर्यावास के विनाश से सबसे ज़्यादा ख़तरा है
- गौर और इंसानों के बीच संघर्ष पहले इतना गंभीर मुद्दा नहीं था लेकिन पर्यावास के नष्ट होने से यह एक गंभीर मुद्दा बनता जा रहा है
- क्योंकि गौर शर्मिले होते है, इसलिए संघर्ष काफी हद तक गांवों में फसल के नुकसान और अतिक्रमण तक सीमित होता हैं
- निम्नीकृत पर्यावासों में सुधार गौर और इंसानों के बीच संघर्ष को कम कर सकता है

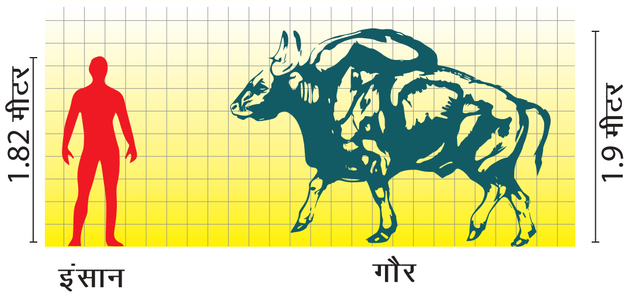

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Forest Department Karnataka
Directorate of Forests Government of West Bengal
CEC Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

गौर दिखाई दे तो क्या करें और क्या न करें

ये करें ✓

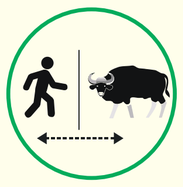

गौर से सुरक्षित दूरी बनाकर रखें क्योंकि ये इंसानों से दूर रहना पसंद करते हैं

जंगल से अकेले गुज़रते समय अपने साथ लाठी रखें और आवाज़ करते रहें ताकि गौर को आपकी उपस्थिति का अहसास पहले से ही हो जाए और वह आपसे दूर रहे

अगर अचानक से गौर के साथ आपका आमना–सामना हो जाता है या आप देखते हैं कि गौर आपको देख रहा है, तो धीरे से पीछे की ओर आ जाएं

गौर अगर आपके पास आ जाए तो उसे भगाने के लिए तेज़ आवाज़ करें। उससे सुरक्षित दूरी तय करने के बाद ही उस पर से अपनी नज़र हटाएं

गौर वाले इलाके में वाहन धीरे चलाएं और सुरक्षित दूरी बनाकर रखें

खेत से निकले कचरे और रसोई के कचरे को सुनिश्चित रूप से ढकी हुई जगह में रखें। कचरे के निपटान के लिए कोई वहनीय उपाय अपनाएं

अगर आपको चोट लगी है तो तुरंत पास के अस्पताल जाएं

ये न करें ✗

सुबह जल्दी या शाम के बाद गैर–लकड़ी वन उत्पाद या पशुधन के लिए चारा इकट्ठा करने के लिए जंगल में न जाएं क्योंकि अधिकतम संघर्ष तभी होते हैं

अगर आपको लगता है कि गौर ने आपको देख लिया है तो अचानक कोई गतिविधि या भागें नहीं क्योंकि ऐसा करने से गौर आपका पीछा कर सकता है और आपको गिरा सकता है जिससे आपको गंभीर चोटें लग सकती हैं

गौर के बछड़े के पास न जाएं क्योंकि वयस्क गौर अपने बछड़ों की कड़ी हिफाज़त करते हैं और वे आप पर आक्रमण कर सकते हैं

गौर अगर आपके पीछे भागता है, तो पेड़ या पत्थरों के पीछे छिपने की कोशिश करें। अगर आप पेड़ पर चढ़ सकते हैं, तो चढ़ जाएं

अपने वाहन से न उतरें और उनका पीछा न करें क्योंकि इससे वे उत्तेजित हो सकते हैं

जानवर का रास्ता न रोकें या उसे अपने रास्ते से हट जाने को मजबूर न करें; इससे वह उत्तेजित हो सकता है

गौर को भगाने के लिए उसे पत्थर न मारें; ऐसा करने से वह बचाव के लिए आक्रमण कर सकता है

कचरे को खेत के पास या गाँव के परिसर के पास न डालें। इससे भूखे गौर आकर्षित हो सकते हैं

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
FOREST DEPARTMENT KARNATAKA
Directorate of Forests Government of West Bengal
CEC Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

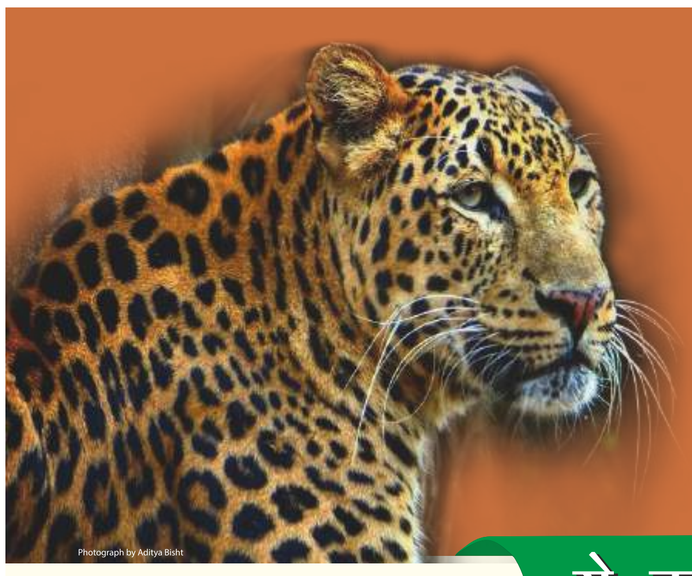

Photograph by Aditya Bisht

गुलदार (तेदुंए) को देखने पर क्या करें और क्या न करें

ये करें	ये न करें
झुंड में यात्रा करें या अगर आप गुलदार वाले इलाके से अकेले गुज़र रहे हैं तो संगीत बजाएं या आवाज़ करते रहें ताकि जानवर को आपकी उपस्थिति का पता लग जाए। इससे वह दूर चला जाएगा	भोर, देर शाम या रात को जंगल के आसपास पशुओं को न चराएं क्योंकि तभी तेंदुए सक्रिय होते हैं
जंगलों में घास चराने की बजाय पशुओं को एक ही जगह पर खाना खिलाएँ	उन जगहों में न जाएं जहां गुलदार दिखाई दिया है। गुलदार खुद इलाका छोड़कर चले जाते हैं। दूसरों को भी उन जगहों की सूचना दें ताकि वे भी उन जगहों या रास्तों से दूर रहें
अगर राह में कभी आपको गुलदार दिखता है तो उसे जाने का रास्ता दें। गुलदार हमेशा ख़तरनाक नहीं होते हैं।	छोटे बच्चों को घर के आसपास अकेला न छोड़ें और उन्हें गाँव में अकेले न घूमने दें
अपने पशुधन को गुलदार से बचाव प्रदान करने वाले ग्रिल के बाड़े में रखें	रात को खुले में अपने पालतू कुत्ते को न बांधें या उसे अकेला न छोडें क्योंकि कुत्ते तेंदुए को आकर्षित करते हैं
कूड़ेदानों को ढक कर रखें और कचरे का निपटान कुशल रूप से करें क्योंकि खुले में पड़े कूड़े से आवारा कुत्ते, आवारा जानवर और दूसरे जंगली शाकाहारी जानवर आकर्षित होते हैं और इनकी उपस्थिति तेंदुए को आकर्षित करती है	बच्चों को बाहर अकेले खेलने न दें और अँधेरा होने पर बुजुर्ग इंसान को घर के बाहर न जाने दें
अपने घर के आसपास उगे सभी झाड़ियों और लंबी घासों को हटा दें। इससे गुलदार घर के आसपास छिप नहीं सकेगा	गुलदार के सामने डर या गुस्सा न दिखाएं और अचानक कोई गतिविधि न करें क्योंकि इससे तेंदुआ आपको शिकार समझकर आप पर आक्रमण कर सकता है।
शाम को और रात को अपने घर के आसपास की जगहों को रोशन रखें, और भोर या देर रात बाहर जा रहे हैं तो टॉर्च लेकर चलें	खुले में शौच न करें; शौचालय का इस्तेमाल करें।
माँ के बिना शावक दिखने पर वन विभाग को सूचित करें। शावकों को छूए या उठाए नहीं क्योंकि उनकी माँ आसपास हो सकती है और आक्रमण कर सकती है	गुलदार के लिए किए जाने वाले बचाव कार्य के आसपास भीड़ जमा न करें और तस्वीर लेने या विडियो बनाने की कोशिश न करें। बिना रुकावट किए बचाव दल को अपना कार्य करने दें
इंसानों के रहने की जगह, इमारत या घर में अगर कोई गुलदार घुस आता है तो वन विभाग को सूचित करें	इंसानी पर्यावास में गुलदार के घुस आने पर उसके आसपास भीड़ जमा न करें क्योंकि भीड़ को ख़तरे के रूप में देखकर गुलदार आक्रमण कर सकता है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

गुलदार (तेंदुआ)

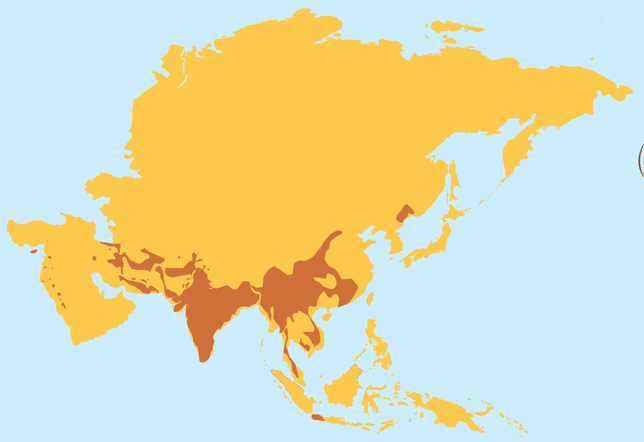

एशिया में पर्यावास

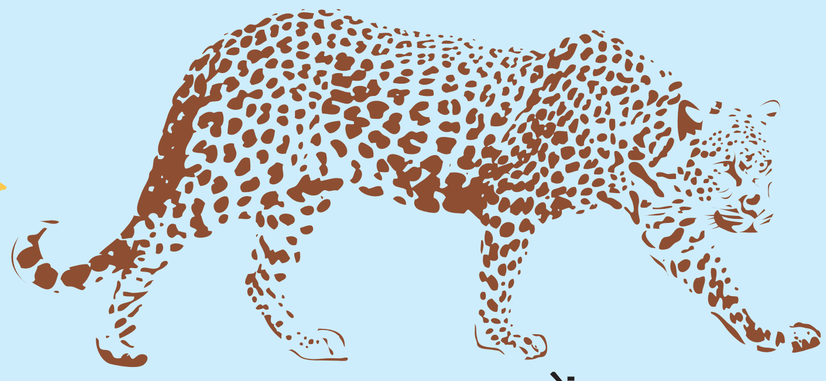

भारत में
12000-14000
की आबादी
आईयूसीएन (IUCN) स्थितिः असुरक्षित

प्रजनन

- गुलदार के अधिकतम शावकों का जन्म और इनके शिकार का प्रजनन काल एक ही साथ होता है
- गुलदार में पूरे साल प्रजनन करने की क्षमता होती है; हालांकि, दिसम्बर में अधिकतम प्रजनन होता है

औसत जीवनकाल

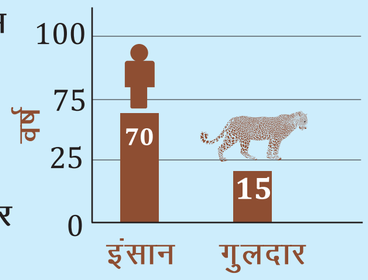

प्रजनन आयु

मादा **18 - 36** महीने नर **24 - 28** महीने

गर्भकाल:

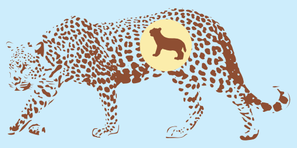

3-3.5 महीने ➡ प्रति मादा **1-2** सालों में शावकों को जन्म देती है

गुलदार के शावक

एक बार में **2-3**

- एकांत और प्रादेशिक जानवर
- मुख्यतः निशाचर लेकिन दिन में सक्रिय रहने में सक्षम
- संवाद करने के लिए गंध के निशान और स्वरोच्चारण का उपयोग करता है और क्षेत्र को चिह्नित करने के लिए पेड़ को खरोंचता है
- घात लगाकर शिकार करता है; झाडियों या अँधेरे में छिपकर शिकार पर आक्रमण करता है
- पेड़ों के ऊपर बैठकर शिकार पर नज़र रखता है। वनस्पति वाले क्षेत्रों में शिकार करता है
- इतना शक्तिषाली है कि बड़े जानवरों को पेड़ों के ऊपर ले जाने में सक्षम है
- अच्छा तैराक, पानी में मछलियों और केंकड़ों का शिकार करता है
- अत्यंत अनुकूलनशील; पैड़ – पौधे और झड़ियों वाले इंसानी पर्यावास के पास रहने में सक्षम
- कुत्तों और दूसरे जानवरों पर आक्रमण करता है जो कचरे के ढेरों की ओर आकर्षित होते हैं

क्या आप जानते हैं?

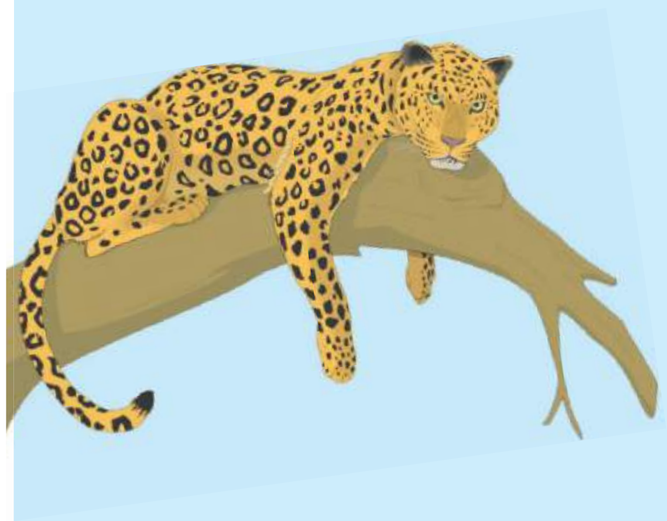

गुलदार के शरीर पर काले धब्बे होते हैं जिन्हें रोसेट्स कहते हैं। इनकी उपस्थिति गुलदार को छलावरण में मदद करती है

यहां तक कि गहरे रंग के गुलदार के शरीर पर भी धब्बे होते हैं जो कि उनके काले रंग के कारण आसानी से दिखाई नहीं देते हैं

गुलदार पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाकर रखते हैं जिससे लोगों को खाना, पानी और दूसरे संसाधन प्राप्त होते हैं

गुलदार अवसरवादी होते हैं; वे छोटे पशुओं साथ ही, अकेले छोड़े गए छोटे बच्चों और बुजुर्ग इंसानों पर आक्रमण कर सकते हैं

इंसानों पर किए गए ज़्यादातर आक्रमण आकस्मिक होते हैं या तब होते हैं जब किसी गुलदार को लोग फंसा या घेर लेते हैं

गुलदार ज़्यादातर आसानी से पकड़े जाने वाले शिकार पसंद करते हैं। प्राकृतिक शिकार के अभाव में ये पशुधन या कुत्तों को अपना खाना बना लेते हैं

पशुधन जैसे गाय, बकरियों को जंगलों में चराना गुलदार और इंसानों के बीच संघर्ष का मुख्य कारण होता है

गुलदार प्रादेशिक जानवर हैं। वनों के नुकसान के कारण, वयस्क गुलदार को जंगलों से बाहर किशोर गुलदार द्वारा मानव बस्तियों में धकेला जा रहा है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

बंदर

बंदर

पर्यावासः विस्तृत

अपना व्यवहार विभिन्न पर्यावासों और इंसानों के अनुरूप करने में सक्षम

इंसानी पर्यावासों में बड़े दल और उच्च घनत्व में उपस्थिति

आहारः सर्वभक्षी

इंसानी पर्यावासों में इनके आहार का 90% से ज़्यादा हिस्सा इंसानों द्वारा प्रभावित होता है

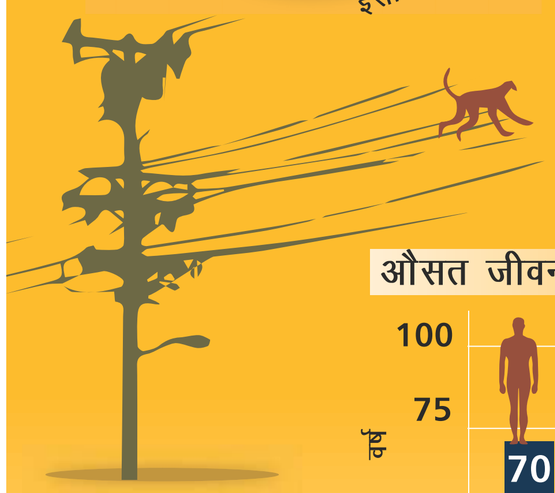

आईयूसीएन (IUCN) स्थिति : ख़तरे से बाहर

- इनका शरीर भूरे रंग का होता है जबकि मुंह और नितम्ब गुलाबी रंग का होता है
- संतुलन और छलांग लगाने के लिए अपनी पूँछ का इस्तेमाल करता है
- सामाजिक झुंड में रहता है; नर एक दल से दूसरे दल में शामिल हो जाते हैं जबकि मादाएं अपना पूरा जीवन एक ही दल में गुज़ारती हैं
- आक्रामक व्यवहार द्वारा अपनी प्रधानता दर्शाता है जैसे मुंह खोलकर धमकाना, खींचना, धक्का देना, झपट्टा मारना, काटना आदि
- अत्यंत चतुर, इंसानी पर्यावास में रहना सीख गया है
- ऊँचे शिखर चढ़ने में सक्षम होता है लेकिन जमीन पर बहुत समय व्यतीत करता है
- इन्हें तैरना आता है; छोटे बंदर तो जन्म के कुछ दिनों के अंदर ही तैरना सीख जाते हैं
- बंदर अपने दल के दूसरों सदस्यों को संवारकर, उनके पास बैठकर और खेलकर सामाजिक रिश्ता स्थापित करते हैं
- दिन में सक्रिय रहता है लेकिन अधिकतम घंटे सामाजिक रिश्ते स्थापित करने और आराम करने में व्यतीत करता है.
- जंगल में रहने वाले दल खाना ढूंढने में ज़्यादा समय बिताते हैं। इनका जन्म दर खाने की उपलब्धता पर निर्भर करता है
- कचरे के ढेरों में पड़ा उच्च पौष्टिक खाना इन्हें आकर्षित करता है और इनकी बढ़ती आबादी में अपना योगदान देता है

दल का आकार

दल का आकार 10–80 बंदरों के बीच होता है

खाने की कमी न हो तो एक दल में 200 से अधिक बंदर हो सकते हैं

प्रजनन की आयु

2.5 – 4 साल | गर्भ कालः 5.5 महीने

हर साल एक महिला

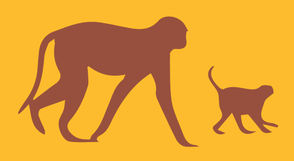

एक शावक को जन्म देती है जुड़वां शावक कभी–कभार ही होते हैं

आकार

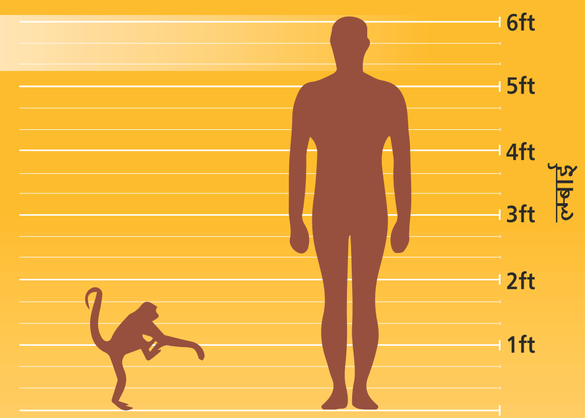

बंदर 1.75 फ़ीट इंसान 6 फ़ीट

औसत जीवनकाल

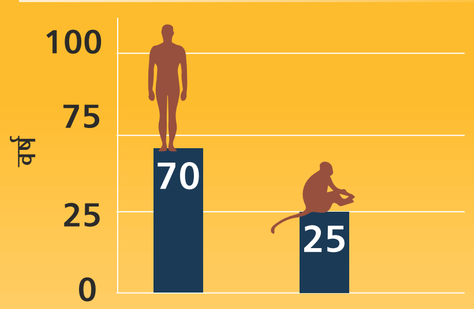

क्या आप जानते हैं?

बंदर भारत में मनुष्यों के बाद सबसे व्यापक रूप से वितरित प्राइमेट हैं

बंदर फलदार पेड़ों से बीजों को यहां–वहां बिखेरकर पारिस्थितिकी तंत्र में अपना योगदान देते हैं

नर और मादा दोनों में रेखीय प्रधानता पदानुक्रम देखने को मिलता है

बंदरों के दल लगातार यहां से वहां घुमते रहते हैं जिससे दल टूट जाते हैं और इनके बीच उच्च तनाव की स्थिति बन जाती है

मानव और बंदरों के बीच संघर्ष के अंतर्गत बंदरों द्वारा फ़सल को नुकसान पहुंचाना, घरों में घुस जाना, खाने की चोरी कर उसे खाना और लोगों पर आक्रमण करना शामिल है

लोग धार्मिक कारणों और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार दर्शाते हुए बंदरों को खाना खिलाते हैं। इससे बंदर इंसानों पर निर्भर रहने लगते हैं; परिमाणस्वरुप, वे उनसे खाना छीनने के लिए उन पर आक्रमण कर देते है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Directorate of Forests Government of West Bengal
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

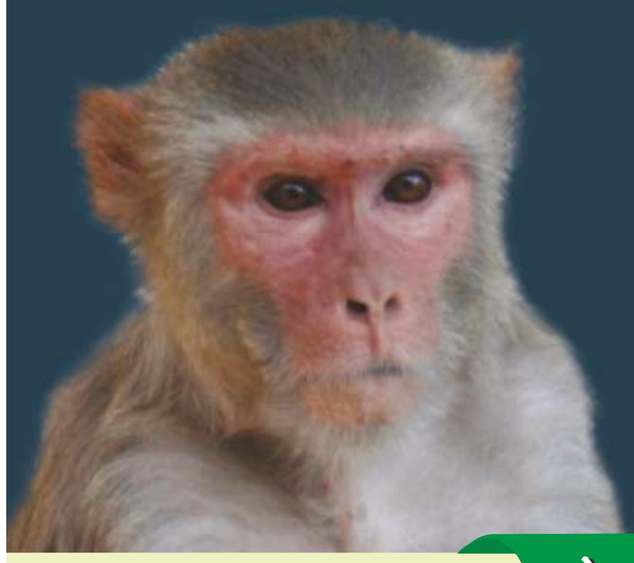

बंदरों के सामने आ जाने पर क्या करें और क्या न करें

ये करें ✓

- बंदरों को अपने आसपास से भगाने के लिए ढोल बजाकर तेज़ आवाज़ करें
- बंदरों से सुरक्षित दूरी बनाए रखें और उन्हें जाने का मौका दें
- बंदरों के आसपास होने पर झुंड में चलें
- बंदरों के आक्रामक व्यवहार को समझें। उनके आक्रामक व्यवहार के अलग–अलग स्तर होते है; शुरुआत में वे किकियाते हैं। फ़िर, मुंह से आक्रमण करने की धमकी देते हैं, फ़िर छलांग लगाते हैं, आपके घुटनों या पैरों को पकड़ते हैं और आखिर में काटते हैं, जो कि गंभीर हो सकता है
- शांत रहें और बिना झटका देते हुए वहां से हट जाएं
- बंदरों के पास आ जाने पर आपके पास अगर खाने का सामान है तो उसे फेंक दें
- पॉलिथीन की थैली में खाने का सामान न लें। इसके बदले कन्धों पर टांगने वाली थैली लें या बैकपैक लें क्योंकि बंदर दिखाई देने वाले खाने के सामान या यहां तक कि सिर्फ़ पॉलिथीन की थैली को भी खाने के सामान के साथ जोड़ते हैं जो उन्हें उसे छीनने के लिए उकसा सकता है
- अपने घर को सुरक्षित रखने के लिए बंदरों से बचाव प्रदान करने वाले ग्रिल लगाएं। इसके साथ बेहतर सुरक्षा के लिए अलार्म, सीसीटीवी, आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है
- कचरे के ढेर को ढककर रखें या उसे किसी जगह में बंद करके रखें क्योंकि कचरा बंदरों को पौष्टिक आहार प्रदान करता है
- बंदरों से दूर रहने के लिए विभिन्न ध्वनिक, दृश्य, सूंघे जाने योग्य और स्पर्शनीय पदार्थों या पद्धतियों का इस्तेमाल करें। ऐसे पदार्थों या पद्धतियों का इस्तेमाल न करें जिनसे बंदरों को चोट लग सकती है या उनकी मृत्यु हो सकती है

ये न करें ✗

- बंदरों की आँखों में न देखें और उन पर पत्थर न फेंकें क्योंकि इससे वे बचाव में आक्रमण कर सकते हैं
- बंदरों पर डंडे से वार न करें क्योंकि इससे वे आप पर आक्रमण कर सकते हैं
- बंदरों की तरफ़ देखकर हंसे नहीं और उन्हें अपने दांत न दिखाएं। वे इसे दोस्ताना व्यवहार नहीं समझते हैं। उनके लिए यह आक्रामक व्यवहार है और इसलिए, इसके बदले वे गुस्से वाला व्यवहार दिखाते हैं। उन्हें चिढ़ाएं नहीं और उन्हें देखकर मुंह न बनाएं
- उन्हें देखकर भागे नहीं या अपने व्यवहार से ऐसा न दिखाएं कि आप डर गए हैं क्योंकि ऐसा देखकर वे आपका पीछा कर सकते हैं
- बंदर के बच्चे को न छुएं क्योंकि मादा बंदर अपने बच्चे की कड़ी हिफाज़त करती है और इसलिए, वह आपको काट भी सकती है
- बंदर को ऐसा न दिखाएं कि आप खाने का सामान उससे छिपा रहे हैं। अगर आपके पास कोई खाने का सामान नहीं है तो बिना डरे अपने हाथ खोल दें ताकि बंदर देख ले कि आपके पास कुछ नहीं है
- सहानुभूति की भावना दिखाते हुए या धार्मिक कारणों से बंदरों को खाना न खिलाएं और उनके सामने खाना न खाएं। ऐसा करने से उन्हें पता चल जाता है उन्हें इंसानों से खाना मिल सकता है; इस तरह वे इंसानों से डरना बंद कर देते हैं और खाने के लिए आक्रमण कर सकते हैं
- अपने घर के दरवाज़े और खिड़कियां बंद रखें क्योंकि बंदर अंदर घुस सकता है
- बंदरों के आसपास होने पर खुले में खाने का कचरा न फेंकें क्योंकि इससे वे आकर्षित होते हैं और इंसानों के करीब आ जाते हैं जिससे कि उनके और इंसानों के बीच संघर्ष बढ़ जाते हैं
- बंदर के काटने या खरोंचने पर बिना देरी किए डॉक्टर के पास जाकर टीके लगवा लें और उनके आदेशानुसार दवाइयां लें

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
FOREST DEPARTMENT KARNATAKA
Directorate of Forests Government of West Bengal
CEC Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

सांप

सांप के काटने पर पीड़ित व्यक्ति को शांत रखें, काटे हुए स्थान को पकड़कर रखें और व्यक्ति को तुरंत ऐसे अस्पताल ले जाएं जहां विषरोधक उपचार उपलब्ध है

पर्यावास
खुले, घासदार और झाड़ी वाले इलाके, खेत, पेड़ों में बने छेद, जंगल और शहर जैसे इंसानी पर्यावास

प्रजाति प्रचुरता
भारत में सांपों की लगभग 300 प्रजातियां पाई जाती हैं। भारत में सांपों को कानूनी रूप से संरक्षित किया जाता है

विशाल 4
अधिकतम सांप कोई हानि नहीं पहुंचाते हैं। अधिकतम मौतों के लिए केवल चार प्रजातियां ही ज़िम्मेदार हैं

कॉमन कोबरा/ स्पेक्टैकल्ड कोबरा

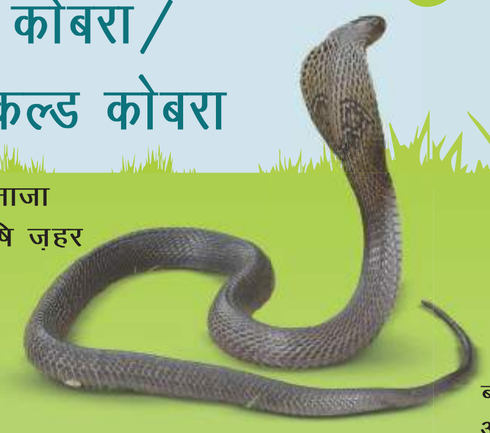

नाजा नाजा
तंत्रिआविषि ज़हर

बड़े आकार का सांप जो गहरे भूरे से लेकर काले रंग का होता है। चौकन्ना होने पर, यह सांप अपना सर उठाता है और बचाव के लिए अपने फन को फ़ैला देता है। इसके शरीर पर बने शल्क मुलायम और अंडाकार होते हैं। फण पर अलग–अलग निशान होते हैं जो कि बिना कोई आकार या फ़िर, स्पष्ट चश्मे के आकार का हो सकता है

- संध्याकाल में यह सक्रिय हो जाता है
- आम तौर पर यह खेतों में पाया जाता है; शिकार और शरण के लिए यह घर में घुस सकता है
- कोबरा अपना बचाव करने और चेतावनी देने के लिए 'हिस्स' की आवाज़ निकालकर अपने फन को उठाता है
- इसके काटने पर तेज़ दर्द होता है और जगह में सूजन आ जाती है, साथ में, लगातार खून भी बहता है। पीड़ित व्यक्ति उल्टी कर सकता है, उसे सांस लेने में परेशानी हो सकती है और उसे धुंधला दिखाई दे सकता है
- इसके ज़हर से पीड़ित व्यक्ति का शरीर लकवाग्रस्त हो सकता है; उसे सांस लेने में परेशानी हो सकती है और दिल का दौरा भी पड़ सकता है

ज़्यादातर सांप के दंश की घटनाएं बारिश के मौसम में होती हैं क्योंकि बारिश का पानी उनके बिलों में घुस जाने के कारण वे घरों और खेतों में चले जाते हैं

कॉमन क्रेट

बंगारस कैरूलेस
तंत्रिआविषि ज़हर

मध्यम आकार का सांप जिसका शरीर काले या नीले–काले रंग का होता है जिस पर दूधिया–सफ़ेद रंग की पट्टियां (अकसर दो) बनी होती हैं। कभी–कभी ये पट्टियां शरीर के आगे के हिस्से में नहीं होती हैं। इसके शल्क मुलायम होते हैं और हड्डीवाले क्षेत्र में षट्कोणीय आकार के होते हैं

- रात के समय सक्रिय रहता है
- इसे पत्थर वाले इलाकों, दरारों, सीमेंट की बनी सिल्लियों, पत्तों के कचरों, दीमक के टीलों, चूहों के बिल में रहना पसंद है और अक्सर घरों के अंदर बनी दरारों में भी छिप जाते हैं
- इसे अगर दिन के समय परेशान किया जाए तो यह कुंडली बनाकर अपना सिर अपने शरीर के अंदर छिपा लेता है और बहुत ज़्यादा परेशान करने पर ही काटता है, लेकिन यह रात के समय आक्रामक होता है और बिना चेतावनी दिए काट भी सकता है
- अक्सर ज़मीन पर सोए हुए लोगों को काटता है। इसके काटने से दर्द नहीं होता है और पीड़ित व्यक्ति की जान नींद में ही चली जाती है क्योंकि इसका ज़हर तंत्रिआविषि होता है
- इसके काटने से निचले पेट में ऐंठन, धुंधला दिखना, पसीना आना, उल्टी और बोलने में परेशानी जैसे लक्षण दिखते हैं

रसेल्स वाइपर

दबोइया रसेली
रक्तविषैली ज़हर

ज़मीन पर रहने वाला भारी सांप जिसका पूरा शरीर खुरदरे शल्कों से ढका हुआ होता है। इसका सिर त्रिभुजाकार और समतल होता है और यह गर्दन से अलग दिखता है। इसकी पीठ पर गहरे पीले, पीले भूरे या ज़मीनी भूरे रंग का पैटर्न होता है जिसके साथ गहरे भूरे रंग के निशान होते हैं जो पूरे शरीर में ऊपर से नीचे तक फ़ैले होते हैं। इस हर एक निशान के चारों ओर काला चक्र होता है। इसकी बाहरी सीमा पर सफ़ेद या पीले रंग के हाशिए से ये निशान उभर कर आते हैं

सांप के शावकों में विष ग्रंथियां पूरी तरह से क्रियाशील होती हैं; जन्म के तुरंत बाद ही ये काटने में सक्षम होते हैं

- रात में सक्रिय। ठंडे मौसम में सुबह के समय भी सक्रिय रहते हैं
- ज़्यादातर, खुले, घासदार इलाकों में पाए जाते हैं लेकिन जंगलों, वनाच्छादित बागानों और खेतों में भी होते हैं
- दूर से इनकी रफ़्तार धीमी लगती है और चेतावनी देने के लिए ये प्रेशर कुकर की सीटी की तरह 'हिस्स' की आवाज़ निकालते हैं
- अपने दांतों को खोलकर ये आक्रामक और तेज़ गति से काटते हैं
- इनके काटने पर दर्द होता है, जगह से खून निकलता है और अंग पर छाले पड़ जाते हैं। इसके रक्तवह तंत्र को प्रभावित करने वाले ज़हर के कारण मसूड़ों और आँखों से खून निकलता है

सॉ–स्केल्ड वाइपर/ इंडियन सॉ–स्केल्ड वाइपर

एचिस कारीनाटुस
रक्तविषैली ज़हर

ज़मीन पर रहने वाला छोटे आकार और त्रिकोणीय सिर वाला सांप जिसका पूरा शरीर खुरदरे शल्कों से ढका हुआ होता है। यह ईंट के लाल रंग से लेकर धूल के भूरे रंग में पाया जाता है। इसके सिर पर क्रॉस जैसा निशान बना होता है

- रात के समय सक्रिय, संध्याकाल में शिकार करता है
- रेगिस्तान, अर्ध–मरुस्थलीय इलाकों,पतझड़ वन, घास और झाड़ी वाले मैदानों में रहता है। दिन के समय पत्थरों, लकड़ी के लट्ठों के नीचे छिपा रहता है
- साइडवाइंडिंग लोकोमोशन पद्धति द्वारा रेंगता है, रेंगते समय इसका शरीर अंग्रेज़ी अक्षर 'एस' (S) जैसा हो जाता है
- चौकन्ना होने पर अपने शरीर के शल्कों को लगातार रगड़कर कर्कश आवाज़ निकालता है
- डरने पर, आक्रामक होकर बिना किसी चेतावनी के बार–बार काटता है
- सांप के दंश वाली जगह में सूजन, दर्द होता है, खून निकलता है और छालें पड़ जाते हैं। इससे मसूड़ों और आँखों से भी खून निकलता है

विषैले सांप के काटने पर, समय पर चिकित्सीय परामर्श के अंतर्गत सर्पविषरोधी दवाई ही एकमात्र उपचार है

क्या आप जानते हैं?

- सांप बीमारी और फ़सलों को नुकसान पहुंचाने वाले चूहों को खाकर उनकी आबादी नियंत्रित करके पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन बनाकर रखते हैं
- सांप इंसानों से दूर रहते हैं और केवल डर जाने या आकस्मिक किसी के पैर के नीचे आने पर ही आक्रमण करते हैं
- अक्सर विषैले सांप काटते समय अपना ज़हर इंसान के शरीर में नहीं छोड़ते हैं जिन्हें 'ड्राई बाइट्स' कहा जाता है
- आम धारणा के विरुद्ध सांप इंसानों का पीछा करके उन्हें काटते नहीं हैं; सांपों की स्मरण–शक्ति कमज़ोर होती है और वे इंसानों से दूर ही रहते हैं
- हर साल भारत में लगभग 50,000 लोगों की मृत्यु सांप के दंश से होती है

- सांप अपने शिकार को गतिहीन करने और उसे सफलतापूर्वक पचाने के लिए उसके शरीर में ज़हर छोड़ते हैं। सांपों की विशाल चार प्रजातियां छोटे स्तनधारी, चिड़ियों, रेंगने वाले जानवरों और उभयचरों को खाते हैं
- सांप अपने द्विशाखित जीभ का इस्तेमाल शिकार का पता लगाने और अपने आसपास के वातावरण को समझने के लिए करते ही हैं लेकिन ख़ास तौर पर वे इसकी मदद से अपने शिकार का पीछा करते हैं
- जानकारी, जागरूकता की कमी और डर के कारण सांपों को अंधाधुंध मारा जाता है, यहां तक कि गैर–विषैले सांप भी मार दिए जाते हैं
- जगलों का कम होना, वाहनों के नीचे आकर जान खो देना, चमड़ी और मांस के लिए सांपों का शिकार करना दूसरे ऐसे कारण हैं जिनसे सांप की आबादी को ख़तरा है
- डर के कारण सांपों को अंधाधुंध मार डालना भी एक मुख्य ख़तरा है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Forest Department Karnataka
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication – Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

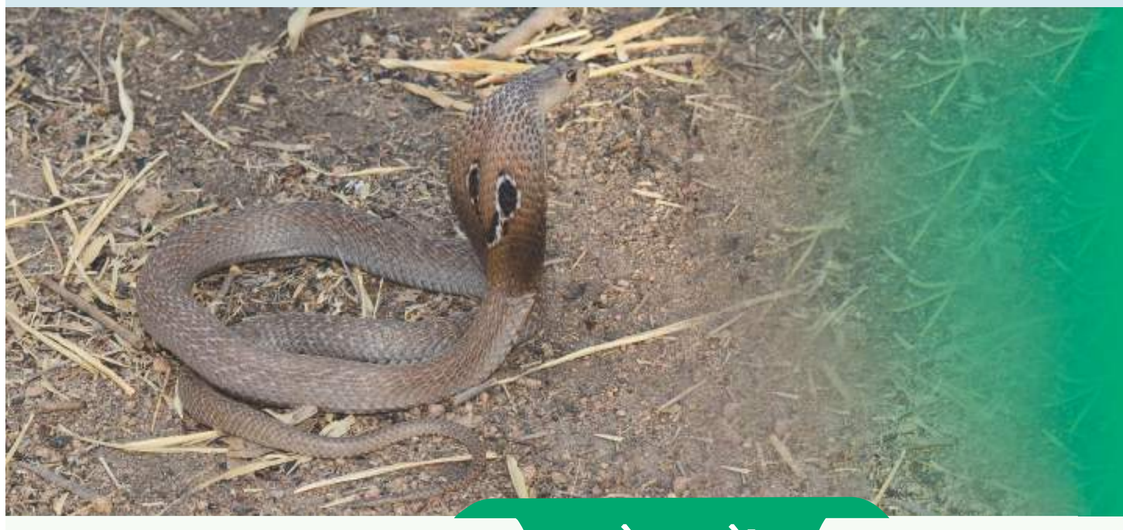

सांप दिखने पर क्या करें और क्या न करें

ये करें ✓

ध्यान रखें कि भारत में पाए जाने वाले ज़्यादातर सांप गैर–विषैले होते हैं। केवल चार प्रजातियां ही अत्यंत विषैली होती हैं: स्पेक्टैकल्ड कोबरा, इंडियन क्रेट, रसेल्स वाइपर और सॉ–स्केल्ड वाइपर

ज़मीन पर काम शुरू करने से पहले एक डंडे को वनस्पति के अंदर यहां से वहां ले जाएं या डंडे से ज़मीन पर ठोकें। इससे अगर कोई सांप वहां है तो वह चौकन्ना हो जाएगा और भाग जाएगा

लकड़ी के लठ्ठे के पास जाने या उन पर बैठने से पहले उनके आसपास अच्छे से नज़र दौड़ा लें। शाम को निकलते समय हाथ में टॉर्च लेकर निकलें

रात को चलते समय, ख़ासकर कच्ची सड़कों और पगडंडियों पर चलते समय टॉर्च का इस्तेमाल करें। फ़सल कटाई के समय किसानों को सावधानी बरतनी चाहिए

सांप पर नज़र रखते हुए उससे दूरी बनाए रखें। आम तौर पर, सांप अपने आप चले जाते हैं। अगर वह नहीं जा रहा है तो बचाव दल को सूचित करना बेहतर होगा। दल के आने तक सांप पर नज़र रखें

सांप के काटने पर, शांत रहें और पीड़ित व्यक्ति को ऐसे किसी अस्पताल ले जाएं जहां विषरोधक उपचार उपलब्ध है

सांप के काटने पर, उस अंग को कसकर पकड़ें और उसे व्यक्ति के दिल के नीचे रखें। काटे हुए स्थान को ढीले बैंडेज से ढक दें

अस्पताल ले जाते समय पीड़ित व्यक्ति को बाईं तरफ़ करके लिटा दें और उनकी दाईं टांग को मोड़ दें। इससे उनका दम नहीं घुटेगा

सर्प बचाव दल, गैर–सरकारी संगठनों या वन विभाग के फ़ोन नंबर अपने पास रखें और घर में सांप घुस आने की स्थिति में इनसे संपर्क करें

चूहों और सांपों को दूर रखने के लिए दरवाज़ों, खिड़कियों में बनी खुली दरारों/छेदों को पतली तार की जाली से बंद कर दें

पाइपों में जहां से जल निकासी होती है वहां जाली लगाएं ताकि सांप अंदर घुस न पाए जबकि गंदा पानी बाहर जाता रहे

बारिश के मौसम में शौचालय और कमोड की जांच कर वहां सांप के न होने की बात सुनिश्चित करने के बाद ही उसका इस्तेमाल करें

ये न करें ✗

सांप दिखने पर डरे नहीं और उसे मारने की कोशिश न करें क्योंकि ज़्यादातर सांप गैर–विषैले और हानिरहित होते हैं। वास्तव में, सांप मुख्यतः चूहे खाते हैं जिससे चूहों की आबादी नियंत्रण में रहती है

सांप के दंश से बचने के लिए, खेतों, चाय और कॉफ़ी के बागानों में नंगे पैर काम न करें। सुरक्षात्मक जूते और सामान का इस्तेमाल करें

ज़मीन पर सोने की बजाय खाट पर सोएं। अगर आपको ज़मीन पर सोना है तो चारों तरफ मच्छरदानी लगा कर सोएं

घर में अनाज को खुला न छोड़ें; इससे चूहे आकर्षित होते हैं और चूहों से आकर्षित होकर सांप घर में आ जाते हैं

सांप दिखे तो उस पर नज़र रखें लेकिन उसके आसपास भीड़ जमा न करें क्योंकि इससे सांप अपने बचाव में आक्रमण कर सकता है

सांप के दंश से पीड़ित व्यक्ति को इधर–उधर भागने न दें। जहां सांप ने काटा है उस जगह को काटने, जलाने या चूसने से बचें। जिस अंग में सांप ने काटा है उसे ज़ोर से नहीं बाधें; इससे खून का प्रवाह रुक सकता है जिससे अंग को काटने की ज़रूरत पड़ सकती है

डरे नहीं और पीड़ित व्यक्ति को तुरंत अस्पताल ले जाएं। तांत्रिक या सपेरों के पास न जाएं क्योंकि इससे पीड़ित व्यक्ति की जान जा सकती है

पीड़ित के शरीर पर घड़ी, अंगूठियों जैसे सहायक वस्तुएं न छोड़ें क्योंकि यदि अंग सूज जाता है तो वे त्वचा को काट सकते हैं

खुद सांप को संभालने या उसे पकड़ने की कोशिश न करें क्योंकि ऐसा करते हुए कई लोगों को सांप ने काट लिया है

सांप को बचाने या उसे हटाने का काम पेशेवर सांप पकड़ने वालों का है। अतः आप खुद उसे पकड़ने का प्रयास न करें

बचाव कार्यों के चलते उनकी तस्वीर खींचने या विडियो बनाने की कोशिश न करें। बाचाव कार्य के कर्मचारियों को काम करने के लिए पर्याप्त जगह दें और उनके आसपास भीड़ जमा न करें

जल–निकासी पाइपों के छोरों को खुला न छोड़ें क्योंकि बारिश के मौसम में उनमें घुसकर सांप आपके घर में प्रवेश कर सकते हैं

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

स्लॉथ भालू

पर्यावास

सूखे पतझड़ वन, भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है

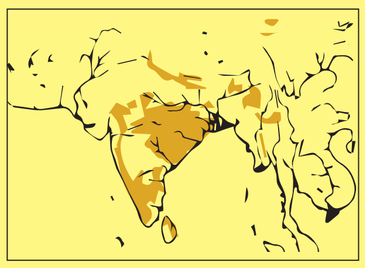

आहार

दीमक, चींटियां और दूसरे कीड़े; मीठे फल, फूल, शहद के छत्ते; कंद और मूल

सर्वभक्षी और अवसरवादी अपमार्जक

व्यवहार

आम तौर पर अकेला रहता है, रातभर खाना ढूंढता है लेकिन सुबह अपने आराम करने की जगह पर लौट आता है। आराम करने के लिए पथरीले या घनेदार क्षेत्र पसंद करता है

भालुओं में देखने और सुनने की शक्ति कम होती है। इसलिए, बहुत पास जाने पर ही वे हमारी उपस्थिति का पता लगा सकते हैं

प्रजनन

मादा अधिकतर सर्दियों में जन्म देती है – दिसंबर के अंत से जनवरी की शुरूआत तक प्रजनन का मौसम स्थान के अनुसार बदलता रहता हैं

प्रजनन आयु

3.5 – 6 साल

गर्भकाल

6-7 महीने

मादा हर तीसरे साल शावकों को जन्म देती है

एक बार में 1–2 शावक

माँ शावकों को पीठ पर लेकर चलती है

शावक अपनी माँ के साथ 1–2 साल रहते हैं

आईयूसीएन (IUCN) स्थिति

असुरक्षित

आबादी

<10,000 to >20,000

औसत जीवनकाल

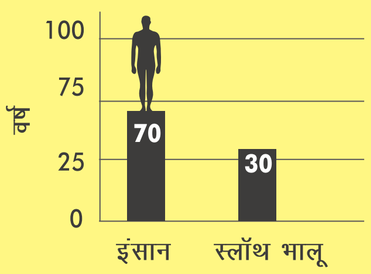

अधिकतम वज़न

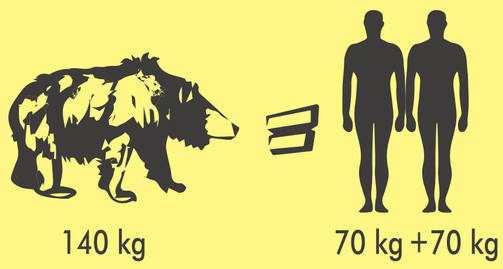

- यह निशाचर होता है जो देर शाम से लेकर भोर तक सक्रिय रहता है
- इसके काले बाल धूल से भरे होते हैं और इसकी छाती पर अंग्रेज़ी अक्षर टी या एल जैसा चिन्ह बना होता है
- शोर मचाता है; खाना ढूंढते या खोदते समय किकियाने और घरघराने की आवाज़ निकालता है
- कीड़ों के घोंसलों और मधुमक्खी के छत्तों पर आक्रमण करते समय यह अपने नथुने बंद कर लेता है जिससे धूल और कीड़े दूर रहते हैं
- पेड़ों पर चढ़कर मधुमक्खी के छत्तों को गिराकर उन्हें खाता है
- मादा गुफ़ाओं में या खुद बिल खोदकर शावकों को जन्म देती है
- शावकों का बचाव करने के लिए मादा इंसानों पर आक्रमण कर सकती है
- ख़तरा महसूस करने पर अपने दोनों टांगों पर खड़े होकर अपना आकार बड़ा बना लेता है और हथियार के तौर पर अपने पंजे दिखाता है
- सूंघने में माहिर लेकिन आँखें कमज़ोर हैं
- अपने आपको इंसानी पर्यावास के अनुकूल बनाने में सक्षम; कचरे से आकर्षित होता है

क्या आप जानते है?

- स्लॉथ भालू बीजों को यहां से वहां फ़ैलाकार और दीमकों की आबादी को नियंत्रित कर पारिस्थितिक तंत्र को संतुलित रखते हैं
- 400 साल से अधिक समय से सर्कस और नृत्य प्रदर्शन के लिए इनका शोषण होता रहा है
- कृषि, खनन, अतिक्रमण, रास्ते या हाईवे जैसी संरचनाओं और पशुओं के चरने से इनके पर्यावास का विखंडन और विनाश हुआ है
- गर्मियों में पानी की कमी भालूओं को इंसानी पर्यावासों की ओर धकेल देती है
- इंसानों द्वारा अति–संग्रहण से फ़ल, शहद के छत्ते और महुआ जैसे गैर लकड़ी वन उत्पादों की उपलब्धता में कमी आई है जिस कारण खाने के लिए स्लॉथ भालू इंसानी पर्यावास में घुस आते हैं जिससे संघर्ष होते हैं
- ये खाने की तलाश में मीलों चल सकते हैं और अक्सर गाँव में पड़े कचरे के ढेर से खाना चुन कर खाते हैं
- गाँव में रहने वालों पर भालू द्वारा आक्रमण की घटनाएं तब अधिक बढ़ जाती हैं जब महुआ फूल और शहद इकट्ठा करने के लिए गाँव वाले जंगल में जाते हैं क्योंकि स्लॉथ भालू भी उन्हीं फूलों की ओर आकर्षित होते हैं
- पारंपरिक फ़सलों को छोड़कर अधिक मुनाफ़ा देने वाले फ़सलों की खेती ने इंसानों और भालुओं के बीच संघर्ष को बढ़ा दिया है क्योंकि भालू ऊर्जा से भरपूर फ़सल की ओर ज़्यादा आकर्षित होते हैं
- गर्मियों में, महुआ फूलों के संग्रहण के समय, सर्दियों में, आग के लिए लकड़ी संग्रहण के समय और बारिश के मौसम में कुकुरमुत्ता संग्रहण के समय संघर्ष होते हैं

भारत में मनुष्य – वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
Forest Department Karnataka
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication – Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

स्लॉथ भालू दिखने पर क्या करें और क्या न करें

ये करें ✓

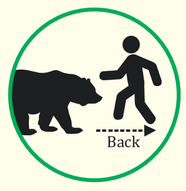

- जंगल में से अकेले गुज़रते समय साथ में डंडा रखें और किसी चीज़ से तेज़ आवाज़ करते रहें। इससे स्लॉथ भालू को आपकी उपस्थिति का प चलेगा और वह आपसे दूर रहेगा
- गैर लकड़ी वन उत्पाद जैसे महुआ फूलों को घर में अंदर रखें ताकि स्लॉथ भालू उनकी ओर आकर्षित न हों
- अहसास होने पर कि स्लॉथ भालू आपको देख रहा है या अचानक उसके सामने आ जाने पर धीरे–धीरे पीछे हट जाएं
- जंगल में स्लॉथ भालू देखने पर और अगर उसने आपको नहीं देखा है, तो रुक जाएं और बिना कोई आवाज़ किए पीछे हट जाएं
- अगर स्लॉथ भालू आपकी ओर दौड़कर आ रहा है, तो अपने दोनों हाथ उठाकर तेज़ चिल्लाएं औए धीरे–धीरे पीछे हट जाएं। इससे स्लॉथ भालू को लगेगा कि आपका आकार उससे बड़ा है और वह आप पर आक्रमण करने का विचार छोड़ देगा
- गाँव में या उसके पास के जंगली इलाके में किसी स्लॉथ भालू को दिखने पर वन विभाग को सूचित करें
- चोटिल व्यक्ति को पास के अस्पताल में लेकर जाएं और वन विभाग को सूचित करें

ये न करें ✗

- जंगल में अकेले यात्रा न करें
- जंगल में रात के समय तेंदू पत्ते या महुआ फूल इकट्ठा करने न जाएं क्योंकि इससे मानव भालू संघर्ष हो सकता है
- आवाज़ न करें, भागे नहीं या कुछ भी ऐसा न करें जिससे स्लॉथ भालू आपकी ओर आकर्षित हो जाए क्योंकि इससे स्लॉथ भालू को ख़तरा महसूस हो सकता है और वह आक्रमण कर सकता है
- स्लॉथ भालू से भागने के लिए पेड़ पर न चढ़ें क्योंकि यह जानवर पेड़ पर चढ़ने में माहिर होता है
- स्लॉथ भालू पर टॉर्च की रोशनी न फ़ेंकें और पत्थर न मारें क्योंकि इससे वह परेशान होकर अपना बचाव करने के लिए आप पर आक्रमण कर सकता है
- सूर्योदय से पहले और रात को शौच के लिए जंगल में या जंगल के किनारे न जाएं; शौचालय का इस्तेमाल करें
- घर के आसपास और रास्ते पर कचरा ख़ासकर खाने से निकला कचरा न फ़ेंकें क्योंकि यह स्लॉथ भालू को आकर्षित करता है

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT · Implemented by giz · Directorate of Forests Government of West Bengal · आज़ादी का अमृत महोत्सव · LiFE Lifestyle for Environment · G20

जंगली सुअर

आईयूसीएन (IUCN) स्थिति : ख़तरे से बाहर

एशिया में पर्यावास

विस्तृत; जंगलों और उनके आस पास के इलाकों में पाए जाते हैं

आहार

कंद और जड़ें, फल, पत्ते कीड़े छोटे मेंढक, सरीसृप

जीवनकाल

10–14 साल

प्रजनन

मौसमी – आम तौर पर बारिश से पहले और बाद में खाने की उपलब्धता और जलवायु पर निर्भर करता है

प्रजनन आयु

8 – 18 महीने

गर्भकाल

3 – 4 महीने

जन्म

एक समय में 4–6 शावक

- जंगली सुअरों के पास बड़े दांत होते है जिन्हें 'टशस' कहा जाता है, जो उम्र के साथ बढ़ते है और मुड जाते है
- घूमकर खाना ढूँढने वाला सर्वभक्षी और अवसरवादी प्राणी
- मुख्यतः निशाचर
- नर की पीठ पर सिर से लेकर शरीर के निचले हिस्से तक घने बाल होते हैं
- खाना ढूँढने या खाना मिलने वाले इलाकों तक जाने के लिए रोज़ 4–8 घंटे यात्रा करता है
- कोई स्वेद ग्रंथि नहीं, शरीर के तापमान को नियंत्रित करने, परजीवियों को हटाने और सूरज की रोशनी से अपनी संवेदनशील त्वचा को बचाने के लिए कीचड़ में लोटता है
- मिट्टी की कई परतों को खोदकर खाना ढूंढ लेता है जिसे रूटिंग कहते हैं
- फसलों को खाकर और खेत को रौंदकर, खोदकर नष्ट कर देते हैं
- इनके लिए खाना, खाना एक सामजिक क्रिया है; नर सुअर के अकेले होने पर वह एक साथ खाना खाने वाले झुंड में शामिल हो जाता हैं
- इंसानी पर्यावासों में खुले में पड़े कचरे के ढेरों की ओर आकर्षित होता है

दल का आकार

4 – 13

दल की संरचना

मादा के साथ हाल ही में पैदा हुए, शावक + थोड़े बड़े शावक और प्रजनन मौसम में वयस्क नर

नर 8 – 16 महीने की आयु में परिवार से अलग हो जाते हैं

मादा शिशु अपनी माँ के साथ रहती हैं

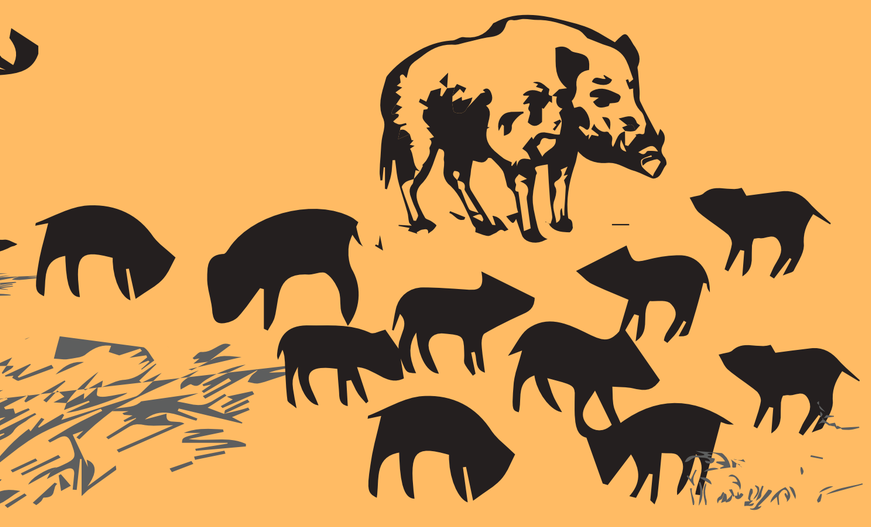

क्या आप जानते हैं?

- मादा और किशोर जंगली सूअरों के झुंड को साउंडर्स कहते हैं। साउंडर्स का आकार मौसम, पर्यावास, जल और खाने की उपलब्धता के अनुसार बदलता रहता है
- भारतीय जंगली सुअर वाइल्ड बोर की उप प्रजाति है। यह यूरोपीय सुअर से अलग है क्योंकि इसकी पीठ पर बालों वाली कलगी होती है, इसकी खोपड़ी ज़्यादा बड़ी और सीधी होती है और इसके कान छोटे होते हैं
- जंगली सुअर दिन में सोने के लिए अस्थायी बिस्तर बनाते हैं। एक बिस्तर में 15 सूअर तक आ सकते हैं। कभी–कभी ये दूसरे जानवरों द्वारा बनाए गए बिलों का इस्तेमाल भी करते हैं
- जंगली सुअर खाद्य श्रृंखला में शीर्ष मांसाहारियों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। ये बीजों को यहां से वहां फ़ैलाकर और परोपजीवियों की आबादी को नियंत्रण में रखकर पारिस्थितिकी तंत्र को बनाकर रखते हैं
- ये जंगलों से दूर खेतों, बागानों और झाड़ी वाले इलाकों में अपनी आबादी तेज़ बढ़ाने में सक्षम होते हैं। इसलिए, ये आसानी से फ़सलों को घातक नुकसान पहुंचा सकते हैं
- जंगली सुअर इंसानों पर तब आक्रमण करते हैं जब अचानक इंसान और जंगली सुअर आमने–सामने आ जाते हैं या खेतों में लोग उन्हें घेर लेते हैं

भारत में मनुष्य – वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत – जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग
2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन
के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन

german cooperation DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT
Implemented by giz Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Ministry of Environment, Forest and Climate Change Government of India
FOREST DEPARTMENT KARNATAKA
Directorate of Forests Government of West Bengal
Centre for Environment Communication Environment is First
आज़ादी का अमृत महोत्सव
LiFE Lifestyle for Environment
G20

जंगली सुअर देखने पर क्या करें और क्या न करें

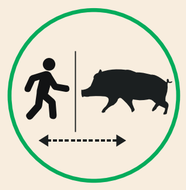

ये करें ✓

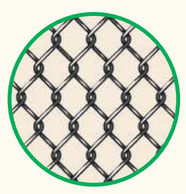

- जंगली सुअर से सुरक्षित दूरी बनाकर रखें
- रात में जंगली सुअर वाले इलाकों से गुज़रते समय टॉर्च का इस्तेमाल करें, समूह में चलें और ऊंची आवाज़ में बाते करते रहें
- जंगली सुअर के बहुत पास आ जाने की स्थिति में तेज़ आवाज़ करें। उससे सुरक्षित दूरी स्थापित करने के बाद ही उस पर से अपनी नज़र हटाएं
- गाँव या रास्ते में जंगली सुअर दिखने पर शांत रहें, धीरे–धीरे पीछे हो जाएं और उससे दूर चले जाएं
- जंगली सुअर और शावक या उसका झुंड सामने आ जाने पर अपने वाहन से न उतरें
- अपने खेतों को सुरक्षित रखने के लिए कलई चढ़े हुए इस्पात के बाड़ लगाएं जिसके पत्थर के आधार को कम–से–कम 1 फुट ज़मीन के अंदर ज़रूर दबा दें
- कूड़ेदानों/डिब्बों पर ढक्कन लगाकर रखें क्योंकि इनसे जंगली सुअर आकर्षित होते हैं
- जंगली सुअर के आक्रमण करने पर तुरंत पास के अस्पताल जाएं

ये न करें ✗

- इस जानवर को घेरे नहीं और इसे उकसाए नहीं; इससे यह आप पर आक्रमण कर सकता है
- जंगली सुअर के शावकों के पास न जाएं और उनका पीछा न करें क्योंकि उन्हें बचाने के लिए वयस्क सुअर आप पर आक्रमण कर सकता है
- जंगल में अकेले गैर–लकड़ी वन उत्पाद (एनटीएफपी) जैसे तेंदू पत्ता, महुआ फूल या बांस इकट्ठा करने न जाएं
- जानवर का पीछा न करें और उसे परेशान न करें। ऐसा करने से वह आप पर आक्रमण कर सकता है
- जंगली सुअरों को पत्थर न मारें क्योंकि अपना बचाव करने के लिए वे आप पर आक्रमण कर सकते हैं
- खुले में या सड़कों के किनारे कूड़ा और खाने से निकला कचरा न फेंकें
- जंगल में या जंगल के आस पास शौच न करें; शौचालय का इस्तेमाल करें
- जंगली सुअर के आक्रमण से लगी चोटें गंभीर होती हैं इसलिए तुरंत अस्पताल जाएं और खुद उसका उपचार न करें

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन पर भारत–जर्मनी सहयोग

2017 – 2023
भारत में मनुष्य–वन्य जीव संघर्ष शमन के संबंध में सामंजस्यपूर्ण सहास्तित्व पद्धति का क्रियान्वयन